Revival Political theory.

(राजनीतिक सिद्धांत का परिष्कृत रूप)

हम जानते हैं कि परंपरागत राजनीतिक विज्ञान और आधुनिक राजनीतिक विज्ञान में पर्याप्त अंतर होने के बावजूद दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। ऐसी अवस्था में आदि दोनों को मिला दिया जाए तो निश्चित रूप से राजनीतिक सिद्धांत का जो रूप सामने आएगा वह बिल्कुल नया रूप होगा। जिसे हम परिष्कृत या समग्र राजनीतिक के नाम से जान सकते हैं।

आधुनिक राजनीतिक विज्ञान शोध और खोजो को परंपरावादी राजनीतिक साहित्य के आधारशिला पर और अधिक परिष्कृत और स्पष्ट किया जा सकता है। वास्तव में जब वे किसी विषय के अध्ययन क्षेत्र या तकनीकी में बदलाव लाया जाता है तो वह पीछे की उपलब्धियों से पूर्णता नाता नहीं तोड़ पाता बल्कि बीते हुए कल की उपलब्धियों पर

पाता बल्कि बीते हुए कल की उपलब्धियों पर भी अपने आप को प्रतिष्ठित करता है और यही बात हमें नए राजनीतिक के संदर्भ में भी कह सकते हैं क्योंकि परंपरागत राजनीतिक विज्ञान के सिद्धांतों एवं विषयों को समझे बिना और प्रयोग किए बिना आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत की कोई नई भूमिका निभा नहीं पाएगा।

वर्तमान समय में आधुनिक और परंपरागत राजनीतिक विज्ञान के 20 शब्द के प्रश्न पर उत्तर देना का प्रयत्न कई राजनीतिक विद्वानों ने किया है। क्या अनुभव वादी दृष्टिकोण पर परंपरागत राजनीतिक सिद्धांत का आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत से अलगाव का कारण है? इस संबंध में पॉलिटिकल बिहेवियर के संपादक हिंद उलाऊ ने कहा है इस प्रश्न का जवाब सकारात्मक और नकारात्मक दोनों दृष्टिकोण से दिया जा सकता है।नकारात्मक उत्तर देते हुए हम लोग अरस्तु को और हॉप्स जैसे महान राजनीतिक विज्ञान का उदाहरण दे सकते हैं

जिन्होंने आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत के विश्लेषण में बौद्धिक प्रेरणा दी है।सकारात्मक उत्तर के लिए मानवीय संबंध के विश्लेषण में प्रयोग होने वाली विज्ञानिक प्रणालियों के अलावा और भी दूसरे चीजों की आवश्यकताओं पर बल दिया है। हिंद उलाऊ ने परंपरागत राजनीतिक सिद्धांत और आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत के अन्योनाश्रय संबंध को स्पष्ट करते हुए कहा है कि मेरे समझ के अनुसार व्यवहारवादीविश्वास मानवी अनुभव के उन आधारों की खोज करता है जिसमें भूतकाल के महान राजनीतिक वैज्ञानिकों के अपने विचारों के लिए पोषण एवं विकास के तत्व पाए थे प्राचीन राजनीतिक सिद्धांत को जिन गुणों के कारण महान समझा जाता है वह गुण मनुष्यों के राजनीतिक व्यवहार से संबंधित उनकी अस्पष्ट तथा कभी-कभी अंतर्निहित मान्यताएं हैं।

परंपरागत तथा आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत के अभिन्न संबंध पर प्रकाश डालते हुए रॉबर्ट डहल ने कहा है कि "यह सोचने का पुराना आधार है कि एकता परंपरागत और आधुनिक राजनीतिक विज्ञान को फिर से स्थापित किया जा सकता है।"

सुकरात, अरस्तु ,मैकियावेली ,हॉब्स तथा डी टॉकविले जैसे राजनीतिक विद्वानों के बारे में अध्ययन करते हैं तो हमें इस बात का पता चलता है कि समय समय पर राजनीतिक विज्ञान का अध्ययन क्षेत्र बदलता रहा है। यह परिवर्तन समय-समय पर होने वाले अनुभववादी ,अन्वेषणो के कारण मतलब वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण ही संभव हो पा रहा है।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत परंपरागत राजनीतिक सिद्धांत का परिष्कृत रूप है या समग्र रूप दोनों

एक ही विषय के ऐतिहासिक विकास के दो चरण है और हमें इसे एक दूसरे से अलग नहीं समझनी चाहिए दोनों दृष्टिकोण को मिलाकर राजनीतिक विज्ञान का संपूर्ण चित्र उकेरा सकता है। जिसे हम निम्न प्रकार से चित्रित कर सकते हैं।

1 व्यापक दृष्टिकोण इसका अर्थ यह है कि राजनीतिक के परिष्कृत सिद्धांत में आधुनिक व परंपरागत राजनीतिक विज्ञान के दोनों विषय समाहित होते हैं जिसके कारण इसका अध्ययन क्षेत्र विषय वस्तु काफी व्यापक होता है।

2 नई राजनीतिक विकासशील विषय है। समय के साथ इसमें नए विषय वस्तु का समावेश होते रहता है इसलिए इससे विकासशील विषय कह सकते हैं।

3 अंतर अनुशासनिक-यह विषय अंतर अनुशासनिक है जिसमें अन्य सारी विषयों से

व्यापक एवं गहरे संबंध देखने को मिलते हैं।

4 बौद्धिक और व्यवहारवादी दोनों है।

5 अनुभवी और वैज्ञानिक दोनों है।

6 इस सिद्धांत के माध्यम से उत्तम जीवन की प्राप्ति की जा सकती है क्योंकि इसमें नए पुराने दोनों विषयों को सम्मिलित किया गया।

7 मूल्य युक्त और मूल मुक्त दोनों है। अर्थात जहां परंपरागत राजनीतिक विज्ञान मुल्य पर अत्यधिक जोड़ देता है वही आधुनिक राजनीतिक विज्ञान मूल्यों पर तनिक भी जोर नहीं देता अर्थात यह मूल युक्त और मूल्य मुक्त दोनों है ।

निष्कर्ष

इस प्रकार जब हम राजनीतिक सिद्धांत का परिष्कृत या पुर्न उत्थान का विश्लेषण करते हैं तो स्पष्ट होता है कि इसका क्षेत्र दिन प्रतिदिन

और अधिक व्यापक होते जा रहा है ।आज यह तर्क और कल्पना पर आधारित नहीं है बल्कि अनुभव वादी एवं वैज्ञानिक पद्धतियों पर आधारित है। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र इस राजनीतिक सिद्धांत के घेरे में आ गया है जिसके कारण आज इसका महत्व और अधिक बढ़ गया है।